SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

संधि प्रकाश रागों में राग भैरव का स्थान

SUNITA KUMARI[1], DR. MADHUMITA BHATTACHARYA UPADHYAY[2]

1Research Scholar, Department of Vocal Music, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University
2Assistant Professor, Department of Vocal Music, Faculty of Performing Arts, Banaras Hindu University

सार

भारतीय शास्त्रीय संगीत अपनी शास्त्र परंपरा का निर्वहन करते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी वास्तविक स्वरूप को बचाए रख पाने में सफल रहा है। भारतीय शास्त्रीय संगीत कुछ विशिष्ट सिद्धांतो से युक्त है। कलाकारों द्वारा प्रस्तुतीकरण के समय राग के विभिन्न सिद्धांत का अनुपालन किया जाता है। जिसमे से एक "रागों का समय सिद्धांत " का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। राग में समय सिद्धांत की धारणा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की अपनी निजी विशेषता है। भारतीय संगीत शास्त्रकारों तथा संगीतकारों ने एक दीर्घ अनुसंधान तथा अनुभव के पश्चात् मनोविज्ञान के आधार पर समय सिद्धांत की धारणा को स्वीकृत किया तथा मान्यता प्रदान की। उन्होंने निश्चित राग को उसके निर्धारित समय पर गाए बजाए जाने का नियम बनाकर उसे प्रचलित किया। संधि प्रकाश रागों का रागों के समय सिद्धांत में एक महत्वपूर्ण स्थान होता है, तो उस समय को ही संधि प्रकाश का समय कहा जाता है। इसी समय में कलाकार योगी ऋषि मुनि अपनी साधना के लिए प्रेरित होकर कार्य सिद्धि के लिए ध्यान केंद्रित करते है। संधि प्रकाश रागों के अंतर्गत प्रातःकालीन राग, राग भैरव को साधना और तप के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। प्रस्तुत शोध में संधिप्रकाश, राग भैरव का ऐतिहासिक विवेचन, सांगीतिक विवेचन तथा राग भैरव का महत्व बताते हुए उसकी चर्चा की गई है।

शोध प्रविधि:- प्रस्तुत शोध पत्र में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, अवलोकनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र:- राग भैरव के उत्पत्ति, विकास तथा महत्व।

***मुख्य बिंदु**:- आध्यात्मिकता, ध्यान, संधिप्रकाश, समय सिद्धांत, प्रातर्गेय, संस्कृति*

परिचय

संधि प्रकाश अर्थात् प्रकाश का मिलन। संधि प्रकाश उस समय को कहा जाता हैं जब रात और दिन का मिलन हो। संधि प्रकाश 24 घंटे में 2 बार आता है एक सूर्योदय तथा दूसरा सूर्यास्त के समय में ही दिन और रात का मिलन होता है इसलिए ऐसे समय को संधि प्रकाश का समय कहा जाता है और ऐसे समय में गाए बजाए जाने वाले रागों को संधि प्रकाश राग कहा जाता है। अतः जो राग संधि प्रकाश के समय गाए बजाए जाते है तो ऐसे रागों को संधि प्रकाश राग कहा जाता हैं और इस समय का एक विशेष प्रभाव मानव तथा सम्पूर्ण वातावरण पर पड़ता है। राग भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक अप्रतिम रचना है। भारतीय शास्त्रीय संगीत स्वयं को राग के द्वारा व्यक्त करता है। राग के बिना शास्त्रीय संगीत की कल्पना करना ही निरर्थक है। जिस प्रकार पुष्प का संबंध सुगंध से है ठीक उसी प्रकार शास्त्रीय संगीत का संबंध राग से है। राग के माध्यम से ही कलाकार अपने सूक्ष्म भावों को प्रदर्शित कर पाने में सक्षम होता है।

राग शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख मतंगकृत बृहद्देशी में प्राप्त होता है जिसमे मतंग ने राग के संबंध में कहा :-

"स्वर वर्ण विश्लेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः
रंजयते येन य: कश्चित स राग: सम्मत: सताम"।।[1]

बृहद्देशी, श्लोक संख्या 240 पृष्ठ – 29

अर्थात् वे स्वर वर्ण अथवा ध्वनि भेद जो मानव हृदय को रंजीत करने की क्षमता रखता हो वह राग कहलाता है।

राग के समय सिद्धांत में संधि प्रकाश राग

भारतीय शास्त्रीय संगीत की यह प्राचीन परंपरा है कि इसमें रागों का संबंध दिन के प्रहरो तथा एक साल के विभिन्न ऋतुओं के साथ होता है। संगीत शस्त्रकारों ने अपने अनुभवों तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर विभिन्न रागों का भिन्न-भिन्न समय निर्धारित किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख विशेषता है राग की परिकल्पना है इसके कई तत्व है जिसमे से एक हैं समय सिद्धांत। भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो शाखाओं में से केवल हिंदुस्तानी संगीत पद्धति में राग के समय सिद्धांत का अनुपालन किया जाता है। प्रत्येक राग के गायन, वादन

को दिन और रात के समय चक्रों में तथा ऋतुओं के समयचक्रों में विभाजित किया गया। दक्षिण भारतीय संगीत में इस नियम का निर्वाह नहीं किया जाता है। समय सिद्धांत की धारणा वस्तुत: वैदिक काल में साम के पंच भक्ति द्वारा राग व समय पद्धति का आदिस्रोत देखने को मिलता है।

"ऋतुषु पंचविध सामोपासित वसंतो,
हिडंकारों ग्रीष्म: प्रस्तवोवर्षा उद्गीथ,
शरतप्रतिहारों हेमंतो निधनम"।।[2]

छंदयोग्योपनीषद, तृतीय खंड, पृष्ट संख्या -159

अर्थात् पांच प्रकार के साम की उपासना विभिन्न ऋतुओं में करनी चाहिए। हींकार वसंत, प्रस्ताव ग्रीष्म, उद्धगीत वर्षा, प्रतिहार शरद तथा निधन हेमंत है। "यजुर्वेद में वर्णित सामगान में गायक का स्थान सर्वोपरि है। विशिष्ट हवन कुल के अनुसार ये अनुष्ठान क्रमश: प्रातः सवन मध्याह्न तथा सायं सवन के नाम से जाने जाते हैं।"[3] इसी प्रकार अथर्ववेद में भी दिन के विभिन्न प्रहारों का सामगायन के साथ संबंध स्थापित किया गया। तीन ग्रामों को भी समय से जोड़ा गया अर्थात् षड्ज ग्राम को दिन के प्रथम प्रहर मध्यम ग्राम दूसरा प्रहर और गंधार ग्राम को सांयकाल से जोड़ा गया। राग के समय सिद्धांत का सर्वप्रथम उल्लेख संगीत मकरंद में प्राप्त होता हैं इस ग्रंथ में संगीताध्याय के तीसरे खंड में रागों को इसके योग्य समय पर गाने का मत प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रातःकाल गाए जाने वाले रागों को सूर्यांश, दोपहर में गाए जाने वाले रागों को मध्यांश तथा शाम के रागों को चंद्रांश कहा है। 20वीं शताब्दी में राग के समय सिद्धांत का परिष्कृत और विस्तारशील वर्णन पंडित भातखंडे जी द्वारा किया गया। इन्होंने राग के एक आधुनिक समय सिद्धांत की धारणा का प्रतिपादन करते हुए यह कहा कि "अमुक राग अमुक समय पर हो तो अधिक शोभायमान होगा"।[4]

इन्होंने रागों का समय निश्चित करने के लिए स्वर के आधार पर रागों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जो निम्नलिखित है:-

1. रे, ध कोमल वाले राग
2. रे, ध शुद्ध वाले राग
3. ग, नि कोमल वाले राग

रे , ध कोमल वाले राग

इस वर्ग के राग प्रातः काल 4 बजे से 7 बजे तक गाए बजाए जाते है और इसे ही प्रातः कालीन संधि प्रकाश राग कहते है। जैसे राग भैरव कालिंगड़ा, नट भैरव इत्यादि।

राग भैरव का ऐतिहासिक विवेचन(उत्पत्ति एवं विकास)

राग भैरव एक अतिप्राचीन राग है। इसकी उत्पत्ति विवादित है कुछ संगीतकारों का मानना है कि राग भैरव की उत्पत्ति पंचमुखी महादेव के पूरब मुख से हुई है जबकि कुछ संगीतकारों का मानना है कि राग भैरव भगवान सूर्य के मुख से निकला है जिस कारण इसे दिन के समय गाए बजाए जाने वाले रागों की श्रेणी में रखा है। भैरव भगवान शिव के नामों में से एक है जिसमे वे राख से लिपटे शरीर जटाओं वाले नग्न तपस्वी एवं गंभीर मुद्रा वाले होते थे ठीक इसी प्रकार भैरव राग में भी गंभीर और तपस्वी विशेषताएं होती है :-

प्राचीन समय से ही नटराज शंकर का भारतीय संगीत के साथ घनिष्ट संबंध रहा है। प्राचीन ग्रंथों की ओर दृष्टिपात की जाए तो नारद, भरत, कोहल तथा मतंग आदि अनेक आचार्यों ने भी संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया इनके मतानुसार संगीत शास्त्र के आदि प्रणेता गयानाचार्य नटराज शिव ही है। नारदकृत संगीत मकरंद ग्रंथ में इन्होंने शुद्ध भैरव को सूर्यांश राग के अंतर्गत रखा अर्थात् प्रातः कालीन राग के अंतर्गत रखा तथा इसके रागिनियां जैसे देवक्रिया, पौराली, कांभीरी आदि के बारे भी उल्लेख किया।

13वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में शरंगदेवकृत संगीत रत्नाकर में राग भैरव को रागांग के अंतर्गत आधुनाप्रसिद्ध रागों की श्रेणी में रखा गया। तत्पश्चात "श्रुतिज्ञान चक्रवर्ती" परश्वदेवकृत संगीत समयसार ग्रंथ के चतुर्थ अधिकरण में भी राग भैरव का उल्लेख किया गया है। मिथिला के

प्रसिद्ध संगीतशास्त्रकार साहित्यकार एवं महाकवि पंडित लोचन द्वारा लिखित रागतरंगिणी के चतुर्थ तरंग में राग भैरव को 6 पुरुष रागों में से एक माना गया। तत्पश्चात 1610 ई में सोमनाथकृत रागविवोध के पंचम अध्याय में 51 रागों का उल्लेख मिलता है जिसमे से भैरव राग भी एक है जिसे प्रातः काल गाए जाने वाले रागों के अंतर्गत रखा गया है। आधुनिक शास्त्रीय संगीत के पुनर्जागरण के अग्रदूत पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी द्वारा थाट राग वर्गीकरण के अंतर्गत भैरव थाट से उत्पन्न रागों का भी वर्णन किया गया।

राग भैरव का सांगीतिक विवेचन

राग भैरव में सभी स्वर शुद्ध होते है तथा रे और ध स्वर कोमल होते है। राजा नवाबअलीकृत मारीफुन्ननगमात राग भैरव के विषय में वर्णन करते है कि वर्तमान समय में जो थाट भैरव के नाम से प्रसिद्ध है उसे ही दक्षिण ग्रंथों में गौड़ मालव मेल कहा जाता है।

इसके स्वर निम्नलिखित है :सा रे_ग म प ध_नि सा

राग भैरव की मुख्य विशेषता यह हैं कि इसके ऋषभ और धैवत कोमल है जो कि संधि प्रकाश रागों का मुख्य चिन्ह है। राजा नवाब अली द्वारा इस थाट के अंतर्गत 19 राग बनाए गए जो निम्नलिखित है :-

> भैरव, ललित भैरव, आनंद भैरव, मेघरंजनी, प्रभात, रामकली, कालिंगडा, सौराष्ट्र, विभाष, सावेरी, ललित पंचम, गौरी, बंगाल भैरव, शिवमत भैरव, गुणकली, देशगौड़, जीलफ, जोगिया, अहीर भैरव।

पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने शुद्ध थाट भैरव के 13 रागों का मुख्य रूप से वर्णन किया है। जो इस प्रकार है भैरव, बंगाल भैरव, शिवमत भैरव, सौराष्ट्र भैरव, जीलफ, रामकली, गुणकली, ललित भैरव, गौरी, विभाष, मेघरंजिनी, देशगौड़ एवं बैरागी आदि। राग भैरव को उतरांगवादी रागों में से एक माना जाता है। प्रातः काल के अधिकतर राग इसी श्रेणी के अंतर्गत आते है। नारायण मोरेश्वर खरे ने भी रागांग राग वर्गीकरण का सिद्धांत दिया जिसमे उन्होंने कुल 30 रागांगो में से एक रागंग राग भैरव को भी माना है जिनके अतर्गत भैरव, कालिंगड़ा, शिवमत भैरव, बैरागी भैरव, अहीर भैरव इत्यादि राग आते हैं। भारतीय शास्त्रीय गायक पंडित जसराज जी के अनुसार "भैरव एक सुबह का राग है , और गंभीर शांति इसकी आदर्श मनोदशा है यह गंभीर मनोदशा है और गंभीरता अंतरमुखता और भक्तिपूर्ण दृष्टिकोण का सुझाव देती है।"[5]

भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग भैरव की भूमिका

राग भैरव को प्राचीनता और आध्यात्मिकता का प्रतीक माना जाता हैं। यह राग गहराई युक्त गंभीरता से परिपूर्ण होती है जो सुनने वालों को ध्यान लगाने में मदद करती है। राग भैरव का मानव जीवन पर भी कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है:-

आध्यात्मिक विकास में योगदान

राग भैरव का आध्यात्मिक विकास में बहुत बड़ा योगदान है यह राग शांति और ध्यान का प्रतीक माना जाता है इसका वादी-संवादी धैवत तथा ऋषभ है जो भक्ति और साधना के लिए अनुकूल है। जो चित्त को शांत करता है और अंतरात्मा की खोज में सहायता करता है। राग भैरव का प्रभाव मनुष्य को संवेदना और आत्म विश्लेषण की ओर अग्रसर करता है इस राग के धुन सुनने से मन और चेतना के मध्य एक जागृति आती है। जो आध्यात्मिक विकास को प्रभावित करती है। यह राग प्रातर्गेय गाए जाने वाले रागों में से एक है जो ध्यान तथा अंतरमुखिता का समय होता है।

राग भैरव के संगीत भक्ति और संपूर्णता के अभिप्राय को प्रकट करता है जो आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर होने में हमारी मदद करता है। राग भैरव का शुद्ध और गंभीर स्वर सुनने वाले को आत्मिक अनुभव प्रदान करता है जिससे यह राग भारतीय संगीत परंपरा में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चूंकि सुबह संधि बेला में उठकर मानव ईश्वर स्तुति करता है। अतः इस समय ऐसे राग जिनके भाव कोमल होते है उन्ही का प्रदर्शन किया जाता हैं। जैसे भैरव आदि। स्व.पंडित निखिल बनर्जी "उगते सूर्य को षडज के तुल्य मानते थे और सूर्य रूपी षडज से उजागर निकटतम स्वर कोमल ऋषभ है। अतः प्रतकालीन संधि प्रकाश रागों में कोमल ऋषभ का प्रयोग होता है। अपने मत को अधिक स्पष्ट करते हुए कहा

कि शाम के रागों में कोमल ऋषभ का प्रयोग षड्ज में लीन होने से होता है। ठीक वैसे ही थका हारा मानव घर लौटता है और गोधुलि बेला में सूर्य प्रकृति की गोद में फिर से छिप जाता है"।[6]

योग साधना में राग भैरव का योगदान

चूंकि यह प्रातः कालीन राग है और प्रात: काल शांति ध्यान और आत्मिक उत्थान के लिए जाना जाता है। भैरव राग का स्वरूप साधक को मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन प्रदान करता है जिससे ध्यान केंद्रित करने में सहायता मिलती है इस राग का उपयोग साधक को आत्मिक अनुभवों और ऊर्जाओं से जोड़ने के लिए किया जाता है। यह राग नकारात्मक भावनाओं को दूर करता है। जिससे साधना में गहराई और प्रभाव बढ़ता है। इसके नियमित अभ्यास से साधक की आत्मा की गहराइयों में जाकर ध्यान की स्थिति को प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार राग भैरव योग साधना में एक महत्वपूर्ण साधन है। जो साधक को ध्यान और शांति की उच्च अवस्था में ले जाने में मदद करता है।

संगीत चिकित्सा में राग भैरव का योगदान

यह राग शांति और स्थिरता प्रदान करता हैं जिससे मानसिक तनाव और चिंता कम करने में मदद मिलती हैं। इस राग में लगे कोमल रे तथा ध स्वर के चमत्कारिक प्रभाव के कारण संगीत चिकित्सालयों में अवसाद से पीड़ित मरीजों का इलाज के लिए राग भैरव का प्रयोग किया जाने लगा है।

साधकों का नीव बनाने में राग भैरव का योगदान

भारतीय शास्त्रीय संगीत के साधक गायक या कलाकार जो शास्त्रीय संगीत की साधना करते है वे अपनी गायकी में नींव स्थापित करने के लिए प्रातः काल अर्थात् ब्रह्म मुहूर्त से ही अपना अभ्यास प्रारंभ करते है राग भैरव शास्त्रीय गायकों तथा वादको को स्वर साधना के लिए मजबूत आधार प्रदान करती है। जिससे उनकी तकनीकी दक्षता में वृद्धि होती है। राग भैरव भारतीय शास्त्रीय संगीत में एक महत्वपूर्ण राग है जो विशेष रूप से सुबह के समय गाया जाता है। इसकी मौलिकता और गहनता इसे संगीत में नींव मजबूतीकरण के लिए अत्यंत प्रभावशाली बनाता है।

"बेगम अख्तर स्वयं बताती है कि पटियाला घराने के गुरु जी अता मोहम्मद खां साहब उन्हे प्रातः 3 बजे उठाकर भैरव के ही सुर लगवाते थे"।[7]

बनारस घराने के प्रसिद्ध युगल गायक पंडित राजन साजन मिश्रा के पिता कहा करते थे "भोर का समय ऋषि मुनियों का समय होता है और ऐसे समय पर रियाज करते समय अगर कलाकार की साधना को सुन लिया तो यह उसे बहुत आशीर्वाद मिलता है इसलिए किसी भी कलाकार का पसंदीदा राग कोई भी हो परंतु रियाज का राग भैरव ही होता है"।[8]

फिल्म जगत में राग भैरव का योगदान

फिल्म जगत में भी राग भैरव का महत्वपूर्ण योगदान है। 1952 में बनी बैजू बावरा का गाना "मोहे भूल गए सांवरिया" राग भैरव पर आधारित है। जिसके निर्देशक नौशाद खां तथा गायिका लता मंगेश्कर है। फिल्म अनुराग की गीत "सुन री पवन पवन पुरवैया"। फिल्म जगत रहो के गीत "जागो मोहन प्यारे" इत्यादि। राग भैरव एक भक्तिरस युक्त राग होने के कारण ज्यादातर भजनों को बनाने में फिल्म निर्देशकों द्वारा राग भैरव का ही चयन किया जाता है।

परिणाम तथा परिचर्चा

भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग भैरव एक अतिप्राचीन रागों में से एक है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के समय सिद्धांत चक्र में प्रातर्गेय रागों में से एक प्रमुख है। यद्यपि समय सिद्धांत का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं हैं फिर भी रागों के विशाल समूह को एक क्रम में बनाए रखना तथा समय से जुड़ी कलाकारों की मानसिक प्रवृत्ति को बनाए रखने के लिए रागों को एक निश्चित समय पर गाना बजाना ही उचित माना गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार हम कह सकते है कि जिस प्रकार मानव अपने धर्म के अनुसार अपने संस्कारों को ग्रहण करता है ठीक इसी प्रकार भारतीय शास्त्रीय संगीत ने रागों के समय सिद्धांत को भी ग्रहण किया। इसमें से भैरव राग को ऐसा माना गया कि इसका अभ्यास संगीत गायकों को उसकी लक्ष्य के सर्वोच्च शिखर तक पहुंचा सकता है क्योंकि इस राग में साधना, आध्यात्मिक चेतना, योग साधना आदि को विकसित करने की अपार क्षमता होती है।

संदर्भ

1. Koushal, P. (2004). Sandhi Prakash Raga, pg-2
2. Koushal, P. (2004). Sandhi prakash Raga, pg-4
3. Pathak, S. (2016). Hindustani sangeet me raga ki utpatti evam vikas, pg-286
4. Bhatkhande, V.N. (1956). Bhatkhande Sangeet Shastra, Bhag-2 pg-60
5. See https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bhairav_(raga), (accessed on 22-10-2024)
6. Mahajan, A. (1990). Ragas in Indian classical music, pg-69
7. See https://youtu.be/owEbUPtwqOg?si=hwAN7lCE1nL1Rqk3, (accessed on 25/10/24)
8. See https://youtu.be/owEbUPtwqOg?si=hwAN7lCE1nL1Rqk3, (accessed on 25/10/24)